

सन्पादकीय

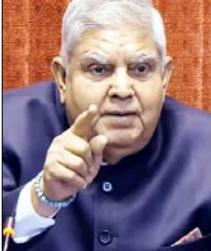
बुधवार, 23 अप्रैल 2025

दुबे पर सुनवाई

मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट भाजपा संसद निश्चिकांत दुबे के खिलाफ आगले हफ्ते सुनवाई करने के लिए तैयार हो गया है। इसकी अभी तारीख तय नहीं की गई है। सुप्रीम कोर्ट में दुबे के खिलाफ कई याचिका दायर की गई हैं निश्चिकांत दुबे अपने 19 अप्रैल को दिए गए अपने बयान को लेकर राजनीतिक गलियारों में चर्चा का विषय बने हुए हैं। जिसमें उन्होंने कहा था कि देश में गृहयुद्ध के लिए सीज़आई संजीव खना और धार्मिक युद्ध भड़काने के लिए सुप्रीम कोर्ट जिम्मेदार है। उनकी यह टिप्पणी सुप्रीम कोर्ट के आठ अप्रैल को दिए एक आदेश को लेकर आई थी। आगे उन्हें कहा था कि सीज़आई पर राष्ट्रपति को उनके खिलाफ भी तीर फैसला लेना होगा। उनके बाद से कई याचिकाएं दुबे के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में दायर की गई हैं। 20 अप्रैल को पूर्व आईपीएस अधिकारी रहे अमिताभ ठाकुर ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की और मांग की कि उनके बयानों को अपाधिक दायर में लाया जाए। उनसे पहले सुप्रीम कोर्ट के वकील नंदें मिश्र ने लेटर पिटिशन दायर कर आवामना करावाई शुरू करने का आग्रह किया था। इन दोनों के अलावा सुप्रीम कोर्ट के वकील अनस तनवीर और शिव कुमार त्रिपाठी ने अटानी जनरल को चिट्ठी लिखकर अपाधिक आवामना कार्यवाही शुरू करने की अनुमति मांगी थी। निश्चिकांत दुबे ने जो बयान दिया है वह कोई पहली बार नहीं है सच तो यह है कि वह अपने विवादित बयानों को लेकर ही अन्तिम बार होता है लेकिन तजा यामाल में व अपनी हाथों से कुछ ज्ञाना ही आगे निकल गए है और उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश को ही अपने निशाने पर ले लिया है। भल ही भाजपा दुबे के बयानों से अपने आप को अलग बता रही है और यह उनका व्यक्तिगत बयान बताकर पल्ला झाड़ रही है, लेकिन इससे कोई बहुत ज्ञाना फर्क नहीं पड़ने वाला। बात के बाल निश्चिकांत दुबे की नहीं है बल्कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनराजद् सुप्रीम कोर्ट की आलोचना करने में पीछे नहीं रहे हैं। सबक्षतः यह भारत के इतिहास में पहला अवसर होगा जब सर्विधान के उच्च पद पर बैठे व्यक्ति ने सुप्रीम कोर्ट पर ऐसी टिप्पणी की है। जाहिर है इस तरह कि टिप्पणी एकाएक नहीं की जा सकती और यह एक सोची समझी की निशाने पर बैठे व्यक्ति करता है। तभी तो निश्चिकांत दुबे के बचाव में भाजपा के कई नेता खुलासे भी तारीख करते हैं। उन्होंने जैविक एक राष्ट्र और लोकतंत्र नामिकों द्वारा ही निर्मित होते हैं, उन्हें से प्रत्येक को अपनी भूमिका है, लोकतंत्र की आत्मा प्रत्येक नामिक की अपनी भूमिका है, लोकतंत्र की आत्मा और धर्मकी है, जब नामिक सभा होगा, योगदान देगा, तो लोकतंत्र खिलेगा, इसके मालव बढ़ेंगे और नामिक जो योगदान देता है, उसको कोई विकल्प नहीं है, सर्विधान के अनुसार हम, भारत के लोग सर्वाच्छ शक्ति उनके पास है।

लोकतंत्र में नागरिकों की केंद्रीय भूमिका

किसी भी लोकतंत्र में नागरिकों की केंद्रीय भूमिका होती है और वे जपत्रिनिधियों के माध्यम से अपने इच्छा व्यक्त करते हैं, मेरे अनुसार नामांक एक राष्ट्र और लोकतंत्र नामिकों द्वारा ही निर्मित होते हैं, उन्हें से प्रत्येक को अपनी भूमिका है, लोकतंत्र की आत्मा प्रत्येक नामिक की अपनी भूमिका है, लोकतंत्र की आत्मा और धर्मकी है, जब नामिक सभा होगा, योगदान देगा, तो लोकतंत्र खिलेगा, इसके मालव बढ़ेंगे और नामिक जो योगदान देता है, उसको कोई विकल्प नहीं है, सर्विधान की प्रस्तावना में समाहित है, सर्विधान के अनुसार हम, भारत के लोग सर्वाच्छ शक्ति उनके पास है।

जगदीप धनराजद्
उपराष्ट्रपति

गणतंत्र बचाने की अपील की नौबत क्यों आई

जो पाल में तेजी से घटित गणतंत्रिक उथल-पुथल के बीच भले ही गणतंत्र समर्थक दल एक हो रहे हों।

लेकिन तभाले ऐसे सबल मूँह बाप खड़े हैं जिसका जावाब लोकतंत्र बहाली के बाद से लेकर आज तक की सकार का पास नहीं है। हैरत है 2008 से लेकर अब तक 13 लोकतंत्रिक सरकार नेपाल में सत्ता दुर्दृश्य हुई और सब के सब नेताओं जो धर्मकीत के अनुभाव करने में विफल रहीं। नेपाल इस वक्त तेजी से हो रहे पलायन, महगे इताज के अभाव में बढ़ रही युवा, पार्टी के अधिकारी और युवाओं द्वारा से तात्पर धूरियों को लेकर जूझ रहा है। इस ओर ओरी सरकार का ध्यान नहीं है। प्रमुख माओवादी नेता प्रबद्ध के नेतृत्व में पहली लोकतंत्रिक सरकार हो जा आज की ओरी सरकार, सबके सब जोड़ तोड़ कर किसी तरह सत्ता बचाए रखने की युगा गणित में ही व्यस रहे हैं।

यह अचरज ही है कि दुनिया में जहां कहीं भी राजतंत्र के बाप लोकतंत्र के उदय हो जाए। यह इसका प्रतिरक्षण लोकतंत्र महानी ही है। लेकिन उपराष्ट्रपति नहीं हो रहा। किसी को गही से उतार कर चुनी हुई सरकार का गठन ही लोकतंत्र नहीं होता। लोकतंत्र का मतलब लोकतंत्र हो जाए। जो नेपाल में हो जाए। जो नेपाली जो नेपाली कोंग्रेस की शिनाऊका से खुश नहीं है। वह अकोशित हैं और तीसरों के बिकल्प के हाथ में रहे।

2008 से लेकर अब तक 13 लोकतंत्रिक सरकार नेपाल में खताख्न्ह हुई और सब के सब नेताओं की परिवर्तन की उत्तराधिकारी नेपाली जो नेपाली कोंग्रेस की शिनाऊका से खुश नहीं है। वह अकोशित हैं और तीसरों के बिकल्प के हाथ में रहे।

एक नहीं तीन तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके प्रबद्ध अवकाश अपने आवास पर मिलाए गए राष्ट्रपति अध्यक्ष राज.

और आली भी जनविवास पर खरा नहीं उतारे। ऐसे में द्रिंगिंगदेन सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से जानेंद्र ने राष्ट्रपति नेताओं की कामांशीली पर एवराज जताया और यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा हाने की कोंशश कर रहा है। नेपाल की इस हिंदुवादी पार्टी की हालत अभी शिशु जैसी ही है ऐसे में नेपाली जनता का इस विकल्प के रूप में खड़ा होता है। नेपाल की द्रिंगिंगदेन ने राष्ट्रपति को जनता द्वारा नाम का इस्तेमाल न हो। हाँ नेपाल के बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है। इस विवाद के बाली पार्टी की बाली जावाही यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है।

एक नहीं तीन तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके प्रबद्ध अवकाश अपने आवास पर मिलाए गए राष्ट्रपति अध्यक्ष राज.

और आली भी जनविवास पर खरा नहीं उतारे। ऐसे में द्रिंगिंगदेन सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से जानेंद्र ने राष्ट्रपति नेताओं की कामांशीली पर एवराज जताया और यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होता है। नेपाल की द्रिंगिंगदेन ने राष्ट्रपति को जनता द्वारा नाम का इस्तेमाल न हो। हाँ नेपाल के बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है। इस विवाद के बाली पार्टी की बाली जावाही यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है।

एक नहीं तीन तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके प्रबद्ध अवकाश अपने आवास पर मिलाए गए राष्ट्रपति अध्यक्ष राज.

और आली भी जनविवास पर खरा नहीं उतारे। ऐसे में द्रिंगिंगदेन सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से जानेंद्र ने राष्ट्रपति नेताओं की कामांशीली पर एवराज जताया और यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होता है। नेपाल की द्रिंगिंगदेन ने राष्ट्रपति को जनता द्वारा नाम का इस्तेमाल न हो। हाँ नेपाल के बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है। इस विवाद के बाली पार्टी की बाली जावाही यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है।

एक नहीं तीन तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके प्रबद्ध अवकाश अपने आवास पर मिलाए गए राष्ट्रपति अध्यक्ष राज.

और आली भी जनविवास पर खरा नहीं उतारे। ऐसे में द्रिंगिंगदेन सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से जानेंद्र ने राष्ट्रपति नेताओं की कामांशीली पर एवराज जताया और यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होता है। नेपाल की द्रिंगिंगदेन ने राष्ट्रपति को जनता द्वारा नाम का इस्तेमाल न हो। हाँ नेपाल के बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है। इस विवाद के बाली पार्टी की बाली जावाही यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है।

एक नहीं तीन तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके प्रबद्ध अवकाश अपने आवास पर मिलाए गए राष्ट्रपति अध्यक्ष राज.

और आली भी जनविवास पर खरा नहीं उतारे। ऐसे में द्रिंगिंगदेन सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से जानेंद्र ने राष्ट्रपति नेताओं की कामांशीली पर एवराज जताया और यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होता है। नेपाल की द्रिंगिंगदेन ने राष्ट्रपति को जनता द्वारा नाम का इस्तेमाल न हो। हाँ नेपाल के बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है। इस विवाद के बाली पार्टी की बाली जावाही यह भी कोंग्रेस की बाली पार्टी राष्ट्रपति खुद को विकल्प के रूप में खड़ा होने की शिशश कर रहा है।

एक नहीं तीन तीन बार प्रधानमंत्री रह चुके प्रबद्ध अवकाश अपने आव

